ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
July-September 2024 : 1(4)05-08

©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

डॉ. राकेश रंजन
हिन्दी विभागाध्यक्ष
एम0 डी0 डी0 एम0 कॉलेज,
मुजफ्फरपुर, बिहार-842002

Corresponding Author :
डॉ. राकेश रंजन
हिन्दी विभागाध्यक्ष
एम0 डी0 डी0 एम0 कॉलेज,
मुजफ्फरपुर, बिहार-842002

'राष्ट्रीयता की प्रतिमूर्तिः सुभद्रा कुमारी चौहान'

हिन्दी साहित्य में ओज और शौर्य की कवयित्री के रूप में सुख्यात सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं। छायावादी काव्यधारा के समानान्तर चलनेवाली राष्ट्रीय काव्यधारा को पुष्ट करनेवाली वाग्देवी की पुत्री सुभद्रा कुमारी चौहान भारतीय नवजागरण और राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में अपने तन, मन और जीवन के कण-कण को समर्पित कर अमरत्व को प्राप्त कर चुकी हैं। सच तो यह है कि सुभद्रा कुमारी चौहान का व्यक्तित्व एवं कृतित्व एक-दूसरे का पूरक है। कारण उनकी कथनी-करनी में एकरूपता है। उनका काव्य राष्ट्रीय शक्ति और अस्मिता का महत्तम प्रतिमान है।

हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय काव्यधारा का उद्भव भारतेन्दु युग में होता है और विकास द्विवेदी युग में होता है। तदन्तर यह काव्यधारा अनेक रूपों में फैलकर बहुमुखी होती चली गयी और अपने उत्कर्ष की ओर अबतक बढ़ती रही है। स्वतंत्रता आन्दोलन, सांस्कृतिक जागरण, सामाजिक सुधार एवं राष्ट्रोद्धार की व्यापक चेतना में यह काव्यधारा समा गयी और राष्ट्रीयता और मानवता के मंगल उद्घोष के साथ यह काव्यधारा विश्वव्यापिनी हो गयी है। इस राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के प्रमुख कवियों में मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्रा कुमारी चौहान आदि का विशिष्ट स्थान है। इन कवियों की रचनाओं में राष्ट्रीयता का शंखनाद विभिन्न रूपों में हुआ है।

सुभद्रा कुमारी चौहान (16 अगस्त 1904-15 फरवरी 1948) का जन्म प्रयाग जिले के निहालपुर गाँव में हुआ था। इनका विवाह मध्यप्रदेश के खंडवा निवासी ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान के साथ हुआ। ठाकुर साहब तत्कालीन स्वातंत्र्य आन्दोलन के प्रमुख सेनानियों में से एक थे। पति-पत्नी दोनों महात्मा गाँधी से काफी प्रभावित थे। सुभद्रा जी ने सन् 1921 ई0 में असहयोग आन्दोलन के प्रभाव से अपनी शिक्षा अधूरी ही छोड़ दी और ये राजनीति में सक्रिय भाग लेने लगीं। अपने राजनीतिक कार्यों के कारण इन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व एवं चिंतन का इनकी कविताओं पर भी प्रभाव पड़ा और ये राष्ट्रप्रेम एवं राष्ट्रभक्ति की कविताएँ करने लगीं।

ध्यातव्य है कि बहुत छोटी अवस्था से ही सुभद्रा जी को हिंदी काव्य से प्रेम था जो बाद में जाकर पल्लवित-पुष्पित हुआ। इनकी कविताएँ 'त्रिधारा' और 'मुकुल' में संकलित हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं को ''भाव-दृष्टि से दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम वर्ग में राष्ट्रप्रेम की कविताएँ रखी जा सकती हैं

जिनमें इन्होंने असहयोग या आजादी की लड़ाई में भाग लेने वाले वीरों को अपना विषय बनाया है। इनकी 'झाँसी की रानी' कविता तो सामान्य जनता में बहुत प्रसिद्ध हुई है। दूसरे वर्ग के अन्तर्गत वे कविताएँ रखी जा सकती हैं जिनकी प्रेरणा इन्हें अपने पारिवारिक जीवन से प्राप्त हुई हैं। ऐसी कविताओं में कुछ तो पति-प्रेम की भावना से अनुप्राणित हैं और कुछ में सन्तान के प्रति वात्सल्य की सहज एवं मार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है। इनकी भाषा शैली भावों के अनुरूप सरलता और गति लिये हुए है।''[1]

मुख्यरूप से सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्य-साधना उत्कट राष्ट्रीयता से ओतप्रोत है। उनमें अपूर्व साहस और आत्मोत्सर्ग की ज्वाला धधकती है। हिन्दी काव्य जगत् में एक ऐसी वीरांगना कवयित्री हैं जिन्होंने अपनी आवाज से लाखों युवक-युवतियों को स्वतंत्रता संग्राम में आत्माहुति के लिए प्रेरित किया। स्वाधीनता उनके जीवन और साहित्य का उद्देश्य रहा। उनकी प्रमुख कविताओं में 'झाँसी की रानी', 'वीरों का कैसा हो वसंत', 'राखी की चुनौती', 'विजयादशमी', विस्मृति की स्मृति, 'विदा' आदि में राष्ट्रीयता का तेज वर्तमान है। वर्तमान को साधने के लिए अतीत का गौरव गान आवश्यक है। अतीत की पीठ पर वर्तमान दौड़ता हुआ अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। सुभद्रा जी अतीत की गौरवगाथा द्वारा वर्तमान को झकझोरती हैं। 'झाँसी की रानी' कविता का प्रारंभ अत्यंत प्रभावोत्पादक है-

''सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी
बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी''[2]

यह कविता, कविता नहीं; क्रांति की मशाल बनकर सामने आयी। नवयुवकों के हृदय में आग बनकर धधक उठी। स्वाधीनता आन्दोलन को नयी डगर मिल गयी-

''महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगायी थी
यह स्वतंत्रता की चिनगारी अन्तरतम से आयी थी।''[3]

सुभद्रा जी ने अतीत का उपयोग वर्तमान को प्रेरित, उत्प्रेरित करने के लिए किया है। प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन में महारानी लक्ष्मीबाई ने राष्ट्रीयता की चिनगारी जगायी थी। बलिदानों का इतिहास रचा था। सबकी प्रेरणा बनी थीं-

''हमको जीवित करने आयी बन स्वतंत्रता नारी थी
दिखा गयी पथ, सिखा गयी हमको जो सीख सिखानी थी।।''[4]

ध्यातव्य है कि उपर्युक्त पंक्तियाँ सुभद्रा जी के जीवन में भी दिखती हैं। यह अलग बात है कि इन्होंने यह बात महारानी लक्ष्मीबाई के लिए कही है। 'वीरों का कैसा हो वसंत' कविता राष्ट्रभक्ति से परिपूर्ण है जिसमें अतीत की वीरगाथा के साथ वर्तमान को झंकृत करने की प्रेरणा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व लिखित इस कविता में सुभद्रा कुमारी चौहान ने राष्ट्र के वीरों का आह्वान किया है। उन्होंने एक प्रश्न उछाला है कि वीरों का वसंत किस रूप में हो; आज जब हम पूर्ण स्वतंत्र है; तब भी यह कविता प्रासंगिक है। यह कविता हमें राष्ट्र के रक्षार्थ-सेवार्थ आत्माहुति चढ़ाने की सीख देती है। प्रश्न शैली में लिखित इस कविता में कवयित्री ने वीरों से पूछा है कि जब देश की मिट्टी पुकार रही हो, मातृभूमि अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए आवाज उठा रही हो, राष्ट्र के कण-कण से यही ध्वनि निकल रही हो; उस समय वीरों का क्या कर्तव्य होता है? वे वसंत को प्रिया की गलबाँही में बिताना चाहते हैं या नहीं? कवयित्री बतलाती है कि यह प्रश्न मात्र उनका ही नहीं है, हिमालय से लेकर हिंद महासागर तक तथा पूरब से लेकर पश्चिम तक सारा भारत वीरों से यही प्रश्न पूछता है-

''आ रही हिमालय से पुकार
है उदधि गरजता बारंबार
प्राची पश्चिम भू नभ अपार
सब पूछ रहे है दिग-दिगन्त
वीरों का कैसा हो वसंत?''[5]

कवयित्री ने यहाँ विरोधी परिदृश्य उपस्थापित कर राष्ट्रीय चेतना के रंग को गहरा किया है। उन्होंने 'वीरों का कैसा हो वसंत' कविता में वसंत का बड़ा ही मादक चित्र खींचा है। वसंत ऋतु के आते ही धरती नया शृंगार करने लगती है। कण-कण में उमंग और उल्लास छा जाता है। जन-जन का मन प्रिया से मिलने के लिए बेचैन और विह्वल हो उठता है। सर्वत्र राग-रंग का वातावरण छा जाता है।

सरसों का रंग मन को मोह लेता है। अनंग मधु लेकर आ जाता है। वसुधा पुलकित हो उठती है। दूसरी ओर वीर शत्रु से लड़ने के लिए तैयार है। उसके हाथ में तलवार है। एक ओर प्रिया की बाँहें और सुंदर गर्दन हैं तो दूसरी ओर तलवार है। एक ओर चल चितवन है तो दूसरी ओर धनुष बाण है। वीरों को चुनाव करना है कि उन्हें क्या करना है? प्रिया के गले में बाँहे डालकर आनंद लिया जाए या रणभूमि में शत्रुओं के साथ तलवार से लड़ा जाय-

''गलबाँही हो, या हो कृपाण,
चल चितवन हो, या धनुष बाण,
हो रस विलास या दलित त्राण,
अब यही समस्या है दुरन्त
वीरों का कैसा हो वसंत?''[6]

इतना ही नहीं, कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने भारत के गौरवमय अतीत की कुछ भव्य झाँकियों को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। लंका, कुरूक्षेत्र, हल्दीघाटी, सिंहगढ़ आदि स्थानों का उल्लेख कर भारतीय वीरता के दिव्य एवं प्रकाशमान प्रसंगों को उपस्थित कर कवयित्री हमारे मन में राष्ट्र के लिए शहीद होने की मंगल प्रेरणा देती हैं। राम ने लंका में, अर्जुन ने कुरूक्षेत्र में, महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी में तथा वीर छत्रपति शिवाजी ने सिंहगढ़ में शत्रुओं के छक्के छुड़ाये थे। इन्हीं से प्रेरणा लेने की सीख कवयित्री ने दी है। कवयित्री को दुख है कि चन्दवरदायी और भूषण जैसी काव्यशक्ति उनमें नहीं है कि वे वीरों के मन-प्राणों में जोश भर दें। इनकी कलम तो स्वच्छन्द भी नहीं, पराधीन है। अतः वे असमर्थ हैं। वे कहती हैं-

''भूषण अथवा कवि चन्द नहीं,
बिजली भर दे वह छन्द नहीं
है कलम बँधी स्वछन्द नहीं
फिर हमें बतावे कौन? हन्त!
वीरों का कैसा हो वसंत?''[7]

इसका तात्पर्य यह नहीं कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वीरों में ओज भरने वाला कोई भूषण अथवा चन्दवरदायी जैसा कवि नहीं था। सच तो यह है कि उस भूमिका में स्वयं सुभद्रा कुमारी चौहान ही थीं। भूषण या चन्दवरदायी के न होने की चर्चा उन्होंने अपने समकालीन कवियों को राष्ट्रीय चिंताधारा से जोड़ने के लिए किया है ताकि वे अपने काव्य-सृजन को अन्य प्रवृत्तियों में व्यस्त न कर राष्ट्रधर्म में अपने को न्यस्त करें। 'राखी की चुनौती' शीर्षक कविता में कवयित्री सुभद्रा जी ने भाई-बहन के पुनीत पर्व के माध्यम से भाई-बहन के त्याग और उत्सर्ग का मार्मिक अभिव्यंजन किया है-

''है आती मुझे याद चित्तौरगढ़ की,
धधकती है दिल में वह जौहर की ज्वाला।
है माता-बहिन रो के उसको बुझाती,
कहो भाई तुमको भी है कुछ कसाला।।''[8]

'विदा' नामक कविता भी भाई-बहन के प्रेम से प्रेरित त्याग और बलिदान की कहानी कहती है। 'विजयादशमी' कविता में कवयित्री ने महात्मा गाँधी को राम के रूप में प्रस्तुत कर अतीत की विजयगाथा को वर्तमान से जोड़ दिया है-

''रामचन्द्र की विजय-कथा का भेद बता आदर्श सखी।
पराधीनता से छूटे यह, प्यारा भारतवर्ष सखी।।''[9]

ध्यातव्य है कि सुभद्रा कुमारी चौहान का व्यक्तित्व एवं कृतित्व गाँधीवादी चिन्तनधारा से अनुप्राणित था। सुभद्रा जी ने बापू की अदम्य शक्ति का अभिव्यंजन इन शब्दों में किया है-

''जिसकी वाणी में शक्ति,
भेद कुलिश कपाटों को जाती,
जिसके अंतर का प्रेम देख
असिधारा कुंठित हो जाती।
वह गाँधी हम सब का 'बापू'

वह अखिल विश्व का प्यारा है,
वह उनमें ही से एक जिन्होंने
आकर विश्व उबारा है।।''[10]

'विस्मृति की स्मृति' शीर्षक कविता में रतौना में कसाईखाना खुलने और सरकार द्वारा गोवध की अनुमति मिलने पर कवयित्री ने खुलकर टिप्पणी की है जिसमें भारत का पौराणिक संदर्भ दिखता है। जनता मौन है, क्योंकि वह पराधीन है। उनमें विरोध की शक्ति नहीं है। ऐसे समय में गोरक्षा के लिए गोपाल कृष्ण का सहारा आवश्यक है-

''उधर तुम कहलाते गोपाल,
इधर ये गौएँ दिन-दिन कटें।
कहो, तुम ही कह दो गोपाल,
तुम्हें अब कौन नाम से रटें।।''[11]

निष्कर्षतः सुभद्रा कुमारी चौहान की समस्त राष्ट्रीय कविताओं में ओज और शौर्य की अभिव्यक्ति प्रभविष्णुता के साथ हुई जिसमें त्याग और बलिदान का स्वर ऊँचा है-

''बढ़ जाता है मान वीर का, रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की भस्म यथा सोने से।।''[12]

यद्यपि यह भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन और राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के लिए दुर्भाग्य ही था कि उनका देहावसान एक दुर्घटना में हो गया तथापि वे चिनगारी के रूप में भारतीय जनमानस पर भास्वर हैं।

संदर्भ संकेतः-

1. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ-539
2. सुभद्रा कुमारी चौहान, 'मुकुल एवं अन्य कविताएँ'-'झाँसी की रानी' पृष्ठ-64
3. वही, पृष्ठ-66
4. वही, पृष्ठ-72
5. वही, पृष्ठ-126
6. वही, पृष्ठ-126
7. वही, पृष्ठ-127
8. वही- 'राखी की चुनौती', पृष्ठ-76
9. वही- 'विजयादशमी', पृष्ठ-90
10. सुभद्रा समग्र- 'लोहे को पानी कर देना', पृष्ठ-173
11. सुभद्रा कुमारी चौहान, 'मुकुल एवं अन्य कविताएँ'-'झाँसी की रानी' पृष्ठ-123
12. वही- 'झाँसी की रानी की समाधि पर', पृष्ठ-147

●